समकालीन हिंदी साहित्य में नारी संवेदना

प्रधान सम्पादक : डॉ० दयानंद सालुंके

विनय प्रकाशन, कानपुर

ISBN : 978-81-89187-51-4

पुस्तक	:	समकालीन हिंदी साहित्य में नारी संवेदना
संपादक	:	डॉ. दयानंद सालुंके
कॉपीराइट	:	संपादकाधीन
प्रकाशक	:	**विनय प्रकाशन**
		3ए/128, हंसपुरम्, कानपुर-208021 (उ.प्र.)
		सम्पर्क : 0512-2626241, 09415731903
		vinayprakashankanpur@gmail.com
		www.vinayprakashan.com
संस्करण	:	प्रथम, 2017
शब्द सज्जा	:	विष्णु ग्राफिक्स, कानपुर
मुद्रक	:	पूजा प्रिण्टर्स, कानपुर
जिल्दसाज	:	तबारकअली, कानपुर
मूल्य	:	500.00 रुपये

Samkaleen Hindi Sahitya Me Nari Samwedana

Edited By : Dr. Dayanand Salunke

Price : Rs. Five Hundred Only.

65. समकालीन 'सूअरदान' उपन्यास में नारी संवेदना 303 - 308
प्रा. डॉ. सुचिता जगन्नाथ गायकवाड
66. महिला दलित आत्मकथाओं में स्त्री जीवन 309 - 312
डॉ. संतोष विजय येरावार
67. सिम्मी हर्षिता की कहानी 'चक्रभोग' नारी संवेदना 313 - 316
वैशाली सालियान
68. समकालीन कथा साहित्य में गोविन्द चातक के कृत ''केकड़े'' नाटक में नारी संवेदना 317 - 319
के. विजय लक्ष्मी
69. राजेंद्र यादव के कहानियों में नारी अभिव्यक्ति के स्वर 320 - 322
श्रीमती वीणादेवी देशपांडे
70. अमृतराय के कहानियों में नारी-चित्रण 323 - 327
डॉ राघवेन्द
71. मोहनदास नैमिशराय जी के साहित्य में नारी संवेदना 328 - 331
शोभा पाटील
72. केदारनाथ सिंह के काव्यों में नारी अभिव्यक्ति 332 - 335
जगदीशचन्द्र ब. हनमनाल
73. समकालीन महिला कहानीकार-नारी संवेदना 336 - 339
श्री गंगाधर जी हिरेमठ
74. समकालीन हिन्दी साहित्य में नारी संवेदना 340 - 342
नागराज स्वामी एम्. एस्.
75. समकालीन हिन्दी साहित्य में महिला लेखिकाओं का योगदान 343 - 347
डॉ. वासुदेव शेट्टी
76. समकालीन काव्य में नारी-संवेदना 348 - 352
नीता दौलतकर
77. कृष्णा अग्निहोत्री के कहानियों में नारी संवेदना 353 - 356
अनिता हिरेमठ
78. समकालीन लेखिकाओं के साहित्य में नारी संघर्ष 357 - 360
लालसाब हुस्मान पेंडारी

66

महिला दलित आत्मकथाओं में स्त्री जीवन

डॉ. संतोष विजय येरावार

महिला दलित आत्कथाओं में प्रताडित महिलाओं ने अपनी भोगी हुई पीड़ा और अनुभव को अभिव्यक्त किया है। हाशिए को ताडते हुए अपने मौन को शब्द बद्ध कर पुरुष प्रधान व्यवस्था को चुनौती दी है। आत्मकथाओं के माध्यम सें, अपनी कथा और कथा के माध्यम से महिलाओं को सचेत, आत्मनिर्भर एवं प्रगतिशील बनाने का प्रयास किया हैं। घर–परिवार, उत्पीड़नकारी एवं दमनकारी पुरुषी मानसिकता, समाज व्यवस्था द्वारा निर्माण घृणा एवं असमानता आदि द्वारा प्रताड़ित दलित स्त्री को विकास एवं परिवर्तन के राह पर आने के लिए प्रेरित करने वाली यह आत्मकथाएँ हैं। पितृसत्ता का एकमात्र लक्ष्य हैं स्त्रियों को परंपरा एवं परिवारिक मूल्यों के नाम पर शोषन के पंजे में जकड़ना। परंतु लेखिकाओं ने अपमान, विरोध एवं तिरस्कार को सहते हुए भी अपनी यातना को वाणी प्रदान की। कौशल्या बैसंत्री भी अपनी आत्मकथा में कहती है, "मेरे जैसे अनुभव और भी महिलाओं के होंगे, लेकिन वह समाज और परिवार के भय से अपने अनुभव सबके सामन उजागर करने से डरती हुई जीवन भर घुटन में जीती हैं। समाज की आँखे खोलने के लिए ऐसे अनुभव को सामने आने की जरूरत है।" स्त्रियों को अपने अधिकार के प्रति सचेत करने का प्रयास आत्मकथा है। महिला दलित आत्मकथा प्रताड़ित महिलाओं के जीवन में एक आशा की किरण हैं।

आत्मकथा में स्त्री होने के और दलित होने के संत्रास और पीड़ा को उघाडा है। स्त्रियों के अपमानित और अभावग्रस्त जीवन को उघाडा हैं। दलित होने का और स्त्री होने का दोहरा दर्द स्त्रियों को सहना पड़ता है। रजनी तिलक कहती हैं।, "एक सताई जाती हैं स्त्री होने के कारण, दूसरी सताई जाती है स्त्री और दलित होने पर एक तड़पती है सम्मान के लिए, दूसरी तिरस्कृत है भूख और अपमान से।" दलित स्त्री होने की दोहरी पीड़ा को कौसल्या बैसंत्री की 'दोहरा अभिशाप', सुशीला टाकभौरे की 'शिकंजे का दर्द', उर्मिला पावर की 'आयादान' बेबी कांबळे की 'जीवन हमारा' आत्मकथा प्रमुख है।

कौशल्या बैसंत्री की 'दोहरी अभिशाप; आत्मकथा स्त्री जीवन की करुण गाथा है। एक तरफ स्त्री होने का तो दूसरी तरफ दलित होंने का अभिशप्त जीवन व्यतीत करने वाली स्त्री की त्रासदी को आत्मकथा उजागर करती हैं। दलित और स्त्री होने की पीड़ा एवं वेदना क्या होती है इसका चित्रण आत्मकथा में हैं। दलितों में अशिक्षा, बेरोजगारी, निम्न आर्थिक स्थिति एवं अंधश्रद्धा के कारण स्त्रियों का शोषण होता है जिस कारण उन्हें संपूर्ण जीवन अभावों में जीना पड़ता है तो दूसरी तरफ स्त्री होने का दर्द है। पुरुषों की निर्ममता, असंवेदनशीलता एवं पुरुषी अहंकार के कारण उपजी दासता वृत्ति आदि के कारण एक दलित स्त्री दोहरे अभिशाप में जीती है। इसी दोहरे शोषण के आधार पर लेखिका ने 'दोहरा अभिशाप' यह शिर्षक अपनी आत्मकथा को दिया हैं। समाज में व्याप्त विकृतियों और विंड़बनाओं का साहस के साथ विरोध करती हुई शिक्षा ग्रहण करती है। लेखिका बड़े आरमानों के साथ देंवेद्र कुमार से विवाह करती हैं, परंतु बाकी पुरुषों के सामान ही शारीरिक भूख मिटाने और नौकरों की तरह घर के सारे काम तक लेखिका को सिमित रखा जाता हैं। शोषण, अन्याय और अपमान सहन करने से लेखिका अस्विकार करती हैं और सम्मानपूर्वक जीवन जीने हेतु पति से अलग होने का निर्णय लेती हैं। अपने जिद्दी, घंमडी पति के विषय में वह कहती हैं। "देंवेद्र कुमार को पत्नी सिर्फ खाना बनाने और उसकी शारीरिक भूख मिटाने के लिए चाहिए थी।"[१] उनके पति ने कभी लेखिका के साथ मानवीय व्यवहार नहीं किया। लेखिका को सदैव प्रताडित किया जाता पुरुषों की स्त्रियों के प्रति धारना को उधाडते हुए कौशल्याजी कहती हैं।, "उसने मेरी इच्छा, भावना, खुशी, की कभी कद्र नहीं की। बात–बात पर गाली, वह भी गंदी–गंदी और हाथ उठाना, मारता भी था। बहुत कुछ तरीके से उसकी बहनों ने मुझे बताया था कि वह माँ–बाप, पहली पत्नी को भी पीटता था।"[२] अनेक विरोधों के बावजूद लेखिका ने आत्मकथा में अपने त्रासदी को उघाड़ा। पति, भाई और पुत्र ने भी विरोध जताया। उन्हे लगता है कि स्त्री जीवन बना ही दासता और पुरुषों के आधिनता के लिए। लेखिका अपनी भूमिका में कहती है, "पुत्र, भाई, पति सब नाराज हो सकते हैं, परंतु मुझे भी स्वतंत्रता चाहिए कि मैं भी अपनी बात समाज के सामने रख सकु मेरे जैसे अनुभव और भी महिलाओं को आए होंगे परंतु समाज और परिवार के भय से अपने अनुभव समाज के सामने उजागर करने से डरती और जीवन भर घुटन में जीती है। समाज की आँखे खोलने के लिए ऐसे अनुभव सामने आने की जरूरत है।"[३] आत्मकथा में महिलाओं का होनेवाला आर्थिक, मानसित, शारीरिक एवं मानसिक शोषण व्यक्त हुआ हैं। असमानता का भाव, स्त्रियों को विकास का प्रयाप्त अवसर न देना, निर्णय प्रक्रिया में दोयमस्थान, चार दिवारों तक स्त्री अस्तित्व को सीमित रखना, स्त्रियों का दमन एवं शोषण आदि को आत्मकथा के माध्यम से उद्घाटित किया है।

'शिकंजे का दर्द' 'सुशीला टाकभौरे' लिखित आत्मकथा है जो स्त्री वेदना तथा संघर्ष दस्तावेज है। आत्मकथा स्त्री और दलित होने की वेदना की करूण गाथा हैं। एक तरफ दलित स्त्रियों के प्रति समाज की घृणित, विकृत और कुपोशित मानसिकता और दूसरी तरफ पुरुषी अहंकारी, दमनपूर्ण, असमानतावादी एवं विषाक्त मानसिकता ऐसे दोहरे शिकंजे में फसी स्त्री की कहानी 'शिकंजे का दर्द' आत्मकथा है। दलित स्त्री दोहरे अभिशाप में जीती हैं। एक तरफ स्त्री होने का दर्द जो उसे अपमानित और प्रताडित करता है। दूसरी ओर दलित होने का दर्द, जो उसे शोषण, अन्याय, विरोध एवं तिरस्कार का उत्तरदाई हैं। दलित समाज में व्याप्त अंधश्रद्धा, दैववाद, बेरोजगारी, आर्थिक विपन्नता, नशाखोरी, निम्न जीवन स्तर तथा सुख–सुविधाओं का आभाव स्त्री जीवन को और बदहाल बना देता है। वर्णवाद, जाति–पाति, छूआछूत, एवं उच्च–नीचता, के कारण दलित स्त्री सदैव प्रताड़ना का शिकार होती है। 'शिकंजे का दर्द' ऐसे ही स्त्री की कथा हैं जो शोषण, विषमता, अपमान, पीड़ा, रीति रिवाज, परंपरा, लिंगभेद, गरीबी एवं तिरस्कार के चक्रव्युह में फँसी हैं।

'शिकंजे का दर्द' आत्मकथा में अनमेल विवाह से निर्माण संत्रास, त्रासदी और पीड़ा को भी उघाड़ा गया है। अठरा साल की लेखिका का विवाह छत्तीस वर्षीय सुंदरलाल से हुआ है। अनमेल विवाह के कारण, स्त्री उत्पीड़न से इजाफा होता हैं जो सुशीला जी के साथ हुआ। सीता बर्ड़ी अस्पताल की नर्स लेखिका को कहती है।" तुम्हारी माँ ने देखा नहीं, इतनी बड़ी उम्र के आदमी के साथ तुम्हारा विवाह कर दिया"[४] सुंदरलाल टाकभौरे भी पुरुषी अहंकारी मानसिकता से ग्रस्त थे वे सुशीला जी से दासी और सेविका जैसा व्यवहार करते। अमानवीयता, पशुता, तिरस्कार, अपमान और विरोध का शिकार सुशीला जी को होना पड़ा था। एक बार सुशीला जी खाना खा रही थी तब उनके पति ने क्रोध में उनकी थाली को लात मारी सारा खाना बिखर गया परंतु इस अवूमानना का कारण पुछने का साहस सुशीला जी जुटा नहीं पाई। सुशीला जी के साथ उनके पति सदैव पशु जैसा व्यवहार करते थें जब वे उनसे कुछ कहने जाती तो वें कहते "मेरे पैर पर अपना सिर रखकर माँग तब मैं तेरी बात मानुँगा।"[५] सुशीला जी को घर में लाचारी काा जीवन बीताना पड़ता था। एक अनकहे भय के माहौल में निरंतर जलती रहती थी। कोल्हू के बैल की तरह वे निरंतर घर के कार्यों में लीन रहती उसके बावजूद प्रताड़ना, तिरस्कार, घृणा का सामना उन्हें करना पड़ता था। सुशीला जी का अत्यंत हीन होकर जीवन व्यतीत करना पड़ता था। 'शिकंजे का दर्द' आत्मकथा स्त्री को दोहरे अभिशाप से मुक्ति का प्रयास है। दलित स्त्री परंपरा, पुरुषी मानसिकता, मनुवादी सोच, जातीयता के शिकंजे में जखड़ी हुई है।

आयदान आत्मकथा में उर्मिला पवार ने अपनी वास्तविक जीवन को और समाज की दलित विरोधी मानसिकता को उजागर किया है। 'आयदान' आत्मकथा

ग्रामीण परिवेश के दलित परिवार में जन्मी, पत्नी बड़ी हुई स्त्री की कहानी है जो जीवनभर समाज और परिस्थितियों से लड़ती, झगड़ती और उभरती है। संत्रास, अन्याय अत्याचार आदि को सहन करने के बावजूद भी अपने सदआचरण से प्रभावित करती है। आयदान 'आत्मकथा' में फणसवेल के ग्रामीण परिवेश में व्याप्त, दरिद्रता, अंधश्रद्धा, छूआछूत आदि का जीवंत चित्रण किया है।

अत्याचार के विरोध में और अपने अधिकारों के लिए संघर्ष करने की प्रेरणा आत्मकथा देता हैं। आत्मकथा में आमानवीय विषमताधिष्ठित व्यवस्था के विरूद्ध विद्रोह किया गया है। सामाजिक घृणित मान्याताओं नें स्त्रियों को प्रताडित किया है इस प्रचलित शोषण–प्रधान व्यवस्था के प्रति विद्रोह आत्मकथा के माध्यम से किया गया हैं। आत्मकथा में दलित स्त्री जीवन में व्याप्त अंधकार को मात्र उघाडा नहीं तो सामाजिक परिवर्तन का प्रयत्न किया गया है। आत्मकथा के माध्यम सें पुरुषी मानसिकता को उघाड़ा हैं, जो स्त्रियों को उपभोग की वस्तु मात्र तक सीमित रखता है। उसके अस्तित्व, सामर्थ्या और क्षमताओं को नकारता है। पुरुषी अहंकारी मानसिकता के विरोध में अपनी आवाज बुलंद करने का कार्य स्त्री आत्मकथा में किया गया है। वंशवाद, जाति–भेद, सामाजिक शोषित रूढ़ि–प्रथा, पुरुषी घृणित मानसिकता, रूढ़ियों के असमानतीवादी दृष्टिकोण, तथा सनातनवादी विचारों में परिवर्तन लाने का प्रयास भी आत्मकथा के द्वारा किया गया है।

संदर्भ

१. दोहरा अभिशाप – कौशल्या बैसंत्री, पृ. १०६
२. वही, पृ. १०४
३. वही, पृ. ०८
४. शिकंजे का दर्द – सुशीला टाकभौरे पृ. – १०६
५. वही पृ. – १५१

डॉ. संतोष विजय येरावार
अध्यक्ष, हिंदी विभाग, देगलूर महाविद्यालय, देगलूर
जिला, नांदेड (महाराष्ट्र)

●